जमीन का बटवारा

इदारा तालीम व तरक्की जामिआ
जामिआ नगर, देहली ।

॥

दो शब्द

इस पुस्तक-माला का उद्देश्य यह है कि कम पढ़े लिखे सियानों में :

(१) पुस्तकें, अखबार और पत्रिकाएं आदि पढ़ने और समझने की योग्यता बढ़े ,

(२) जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली बातों के बारे में बुनियादी जानकारी और शब्द-भण्डार प्राप्त हो ।

इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, इदारा तालीम-व-तरक्की जामिआ (प्रौढ़ शिक्षा–विभाग, जामिआ मिल्लिया) देहली ने १२ साल तक सियानों में काम करने के बाद उनकी शिक्षा का एक पाठ्य-क्रम तैयार किया है। वह इस पाठ्य-क्रम के अनुसार सियानों की रुचि और लाभ, उनकी मानसिक योग्यता और शौक़ को ध्यान में रख कर छोटी-छोटी पुस्तकें प्रस्तुत करवा रहा है । अब तक इस विषय की १५० पुस्तक छप चुकी हैं। यह पुस्तकें कुछ कठिन थीं । इस कारण अब हम कुछ सरल पुस्तकें छाप रहे है। यह पुस्तकें इसी सिलसिले की हैं।

भारत सरकार की एजूकेशन मिनिस्ट्री के हम आभारी हैं कि उस ने हमारे इस परीक्षण को पसन्द किया, उसकी आर्थिक सहायता से ही हम ये पुस्तकें आपको भेंट कर रहे हैं।

डायरेक्टर,
इदारा तालीम-व-तरक्की
जामिआ, नई देहली

ज़मीन का बटवारा

(गांव में हरिया का घर। घर का सारा सामान सहन में रखा है। गांव के दो बूढ़े पंच झगड़ूराम और धर्मचन्द बैठे हैं। बात यह है कि हरिया और दीना अलग हो रहे हैं)

धर्मचंद–हरिया! तुम बड़े हो, दीना छोटा है। अगर उसने कोई बेसमझी की बात की है, तो तुम्हीं क्षमा कर दो। रहीम ने भी कहा है:
"छिमा बड़न को चाहिये"

हरिया–दादा ! मैंने तुम्हारी बात को कब टाला है ? पर दीना माने तब न ! वह तो अब एक दिन भी इकट्ठा नहीं रहना चाहता ।

धर्मचंद–क्यों दीना ! हरिया जो कह रहा है वह ठीक है क्या ?

दीना–जी हां, एक बार नहीं, सौ बार कह दिया। मैं अब इकट्ठा नहीं रहूँगा ।

झगड़ूराम–भगवान तुम्हारा भला करे । बस, बात खतम हुई । इसमें नई बात क्या है ? भाई भाई अलग होते ही आये हैं । अब जल्दी से बांटने का काम शुरू करो ।

धर्मचंद–पर भाई झगड़ूराम जी, जहां तक हो सके मेल मिलाप कराने की कोशिश करना तो हमारा काम है । अगर मेल मिलाप का कोई रास्ता न दिखाई दे तो फिर बंटवारे का काम तो आसान है ।

झगड़ूराम–भगवान तुम्हारा भला करे। सो तो ठीक ही है।

दीना–दादा! मुझे तो अब मेल मिलाप की कोई बात दिखाई नहीं देती। टूटे हुए दिल भी कभी जुड़े हैं। कहा भी है।

"तीनों टूटे न मिलें,
मन, मोती और कांच।"

धर्मचंद–अच्छा, तो फिर तुम दोनों भाई हमें पंच मानते हो न। हम जो फैसला करेंगे वह तुम दोनों को मानना होगा। सोच लो, अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। पीछे पंचों को बुरा भला कहना ठीक नहीं।

हरीया और दीना–नहीं नहीं, दादा! आप जो फैसला करेंगे, हमें मंजूर होगा। पंच तो परमेश्वर का रूप होता है।

(दोनों पंच घर के बरतन, कपड़े, अनाज और दूसरी चीजें
दोनों भाइयों में बराबर बांट देते हैं।

धर्मचंद–अच्छा भाई ! ज़मीन, बैल और खेती के दूसरे औज़ार कल बांटेंगे। अब तुम इसी सामान की साज सम्भाल करो। हमें भी कुछ ज़रूरी काम है। उससे निबट लें।

झगड़ू–हां, हां ठीक है। भगवान तुम्हारा भला करें। बाकी बंटवारा कल ही करेंगे।

(पंच चले जाते हैं। हरिया और दीना अपना अपना सामान घर के अंदर अपने अपने हिस्से में रखने लगते हैं)

दूसरा दृश्य

(हरिया सिर पर दोनों हाथ रखे बैठा है। उसकी स्त्री रधिया हाथ में पानी का लोटा लिये खड़ी है। आले में रखा दीपक धीमा धीमा प्रकाश दे रहा है। घर के दूसरे भाग में दीना, उसकी स्त्री और बच्चा है।

रधिया—मैंने रसोई से तीन बार पुकारा, किन्तु आप हैं कि सुनते ही नहीं। खाना ठंडा होरहा है।

हरिया—मुझे तो आवाज़ सुनाई नहीं दी। ख़ैर, जाओ। तुम खा लो। मुझे भूख नहीं है। सिर में दर्द हो रहा है।

रधिया—(पति के माथे पर हाथ रखते हुए) सिर तो गरम नहीं है। यों ही बहाना बना रहे हो मुझे क्या मालूम नहीं है। देखती हूं, अभी भी तुम्हारी आंखें नहीं खुली हैं। जो भाई तुम्हारे साथ बैठ कर भोजन को छूना तक नहीं चाहता, तुम उसी के लिये खाना छोड़ रहे हो। मुझे ही खाओ जो उठो न तो। बड़ा भरत भाई है न जिसके लिये खाना छोड़ रहे हो।

(हाथ से पकड़ कर उठाना चाहती है। इतने ही में हाथ से पानी का लोटा गिर पड़ता है। पट्टी पर सिर रखकर रोने लगती है। वह भी अपना सिर दोनों हाथों में पकड़ कर रोने लगता है।)

(घर के दूसरे भाग में दीना और उसकी स्त्री कल्लो ललुआ के साथ बैठे भोजन शुरू ही करना चाहते हैं। ललुआ मचल रहा है। लोटा गिरने की आवाज सुनकर दोनों चौंक उठते हैं। दीना उठकर उस ओर क्या हो रहा है, यह सुनने के लिये दरवाज़े से सटकर खड़ा हो जाता है। ललुआ रोने लगता है और कहता है कि–

"मैं तो रोटी नहीं खाऊंगा। बली अम्मा के पास जाऊंगा।"

(कल्लो चुप कराने की कोशिश कर रही है)

हरिया–मेरा भाई भरत ही था और वह मेरे लिये तो अब भी भरत ही है। क्या भूल गई मां के आखिरी वचन! मुझे तो अब भी ऐसा लगता है कि मां कह रही है कि "बेटा! मैं अब जा रही हूँ। दीना का ध्यान रखना।" और तुम से वचन लेकर कहा था कि उसे अपना ही बेटा समझना।

रधिया—हां कहा था। वह मुझे आज भी याद है। पर तुम्हीं से पूछती हूं कि क्या मैंने उस वचन के निवहाने में कसर उठा रखी है? उसे बच्चे की तरह नहीं पाला? भगवान ने हमें बच्चे नहीं दिए थे। पर मुझे तो इस का कभी ध्यान तक नहीं आया वह बड़ा हुआ, उसकी शादी की। साल बाद छोटी बहू के पेट से ललुआ का जन्म हुआ। मैं फूली नहीं समाई। सपने में भी उसे दूसरे का बच्चा न समझा। किन्तु हमारे दिल को किसने पहचाना। आज कल्लो जो कहे उसे दीना सच मानता है बाकी सब झूट। कल ललुआ को उसने मेरी गोद से छीन लिया। अगर मेरा कोख जाया बच्चा होता तो किसी की मजाल थी जो उसे मेरी गोद से छीन लेता? अच्छा चलो, अब तक तो रोटी ठंडी भी हो गई होगी।

हरिया—पर मैं कहता हूं, अब खाकर ही क्या करना है। जीने के लिये खाया जाता है न। पर किसी को जीना ही नहीं हो तो वह खाए क्यों ? बहुत देख लिया रधिया। मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि दीना इस तरह पराया हो जायगा। मैं और दीना दो हो जाएंगे और दो हो कर भी जीते रहेंगे।

रधिया मेरे कानों में मां की वह आवाज़ गूंज रही है, "बेटा! मैं अब जाती हूं। दीना का ध्यान रखना।" रधिया! हमें उस आज्ञा का पालन करना ही होगा मां चल गई पर धरती माँ ने हमें नहीं छोड़ा कल ही उस धरती मां के टुकड़े होने वाले हैं। रधिया! मैं यह टुकड़े होने नहीं दूंगा। टुकड़ों में बंटी यह धरती अपने लाड़लों का पेट नहीं भर सकेगी।

गोरा और लाखा की जोड़ी बिछड़ने नहीं दूंगा। बिछड़ कर वे जी न सकेंगे। इन बेज़बान पशुओं का प्यार भगवान के प्यारे कहे जाने वाले आदमियों के प्यार से पवित्र, ज्यादा सच्चा और ज़्यादा पक्का होता है।

क्या भूल गई हो जब गोरा बीमार हुआ था। उसे दो दिन शहर के अस्पताल में रहना पड़ा था तो लाखा ने न चारा खाया न पानी ही पिया था। लगातार दो दिन उसकी आंखों से आंसू बहते रहते थे।

दीना के लिये, नन्हे ललुआ के लिये हमें यह ज़मीन, यह मकान, यह बैल छोड़ देने होंगे। तभी दीना खुशी रह सकेगा। तभी हम मां के आखिरी वचनों का पालन कर सकेंगे।

कहते कहते हरिया का गला रूंध गया और वह बच्चों की तरह सुसक सुसक कर रोने लगा। रधिया जो अब तक अपने को सम्भाले हुए थी अधिक न सम्भाल सकी और रोने लगी। बहुत देर तक दोनों रोते रहे। उधर चूल्हे के पास बरतनों के खड़खड़ाने की आवाज़ हुई। रधिया चौंकी। उसने सिर उठाकर देखा तो बिल्ली रोटी मुंह में डाले दरवाज़े से निकल रही थी।

खाना अब किस को खाना था।

तीसरा दृश्य

(दीना सब कुछ सुन रहा था। उसका सिर शर्म के मारे झुक गया था। उसने बिल्ली को रोटी में मुंह डाले जाते देखा। पर वह छिः तक न कह सका। वह अपने ही आपमें जैसे सिमटा जा रहा था)

कल्लो—छोड़ो भी अब। खाना ठंडा हो रहा है।

दीना—(ज़रा चौंक कर जैसे नींद से जागा हो) क्या कहा ? खाना ठंडा हो रहा है। तुम खाओ। आज खूब पेट भर कर खाओ। भाभी के हाथ का पका तो तुम्हारे गले नहीं उतरता था। सदा भूखी रहती थी और फिर भाभी तुम्हें पेट भर कर खाने को कभी देती नहीं थी। आज तुम्हारे मन की साध पूरी हुई। इसी खुशी में आज हलुवा बना है क्या ? देवताओं को इस दिन के लिये मनोतियां जो मान रखी थीं उनने तुम्हारी मन की साध पूरी की। तुम उनकी साध पूरी करो।

कल्लो–एक छिन भर में न जाने तुम्हें क्या हो गया। अभी तो अच्छे भले खाने बैठे थे। ऐसी जली कटी सुनाने का आखिर मतलब क्या ? तुम्हीं न कहते थे कि खेती का सारा काम मुझे ही करना पड़ता है। भैया दिन भर बैठे हुक्का गुड़गुड़ाया करते हैं। पर हाय री औरत की जात ! तुझे तो सब की सुनने को ही बनाया गया है। मरद तो सदा सांचे होते हैं। मैं कहती हूं कि मैंने सौ झूठी बातें कहीं हों, पर तुम तो मां जाए हो। तुम्हारा मन यदि उनकी तरफ़ से साफ़ था तो फिर मेरी बातों को इतने चाव से क्यों सुनते थे।

दीना–बस चुप रहो। जानता हूं सब कुछ तुम्हारी बातें सुनते सुनते मेरे तो कान पक गए। नित नई शिकायत, नया झगड़ा। काम करती थीं तो तुम।

भाभी तो जैसे निठ्ठल्ली ही बैठी रहती थीं। मैं तो जब भी देखता, वह कुछ न कुछ कर ही रही होतीं थीं। ललुआ को दिन भर गोद में उठाए रहतीं। कभी नहला रही हैं, तो कभी दूध पिला रही हैं। कभी ललुआ के नए कपड़े बनाने की फिकर में है तो कभी उसके लिये नए नए खेल मंगाने की फिकर में। तुम्हारे पास तो वह दूध पीने भर के लिये आता था। अभी भाभी कह रही थीं कि कल तुमने उनकी गोद से ललुआ को छीन लिया था।

जानती हो! भैया अभी क्या कह रहे थे, वह ज़मीन का हिस्सा नहीं लेंगे। बैल भी हमें ही दे देंगे। उन्होंने रोटी नहीं खाई। भैया बहुत दुःखी हैं। वह कह रहे थे कि अब जी कर करना ही क्या है?

(स्वर को कोमल बनाते हुए)

सुनो कल्लो ! अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। अब भी भैया से माफ़ी मांग लूंगा तो वह क्षमा कर देंगे। तुम भाभी से माफ़ी मांग लेना। चलो कल्लो। जल्दी करो, उठो, अभी चलें।

कल्लो—माफ़ी मांग लूं, कैसी माफ़ी। मैंने क्या कसूर किया है जिसके लिये माफ़ी मांग लूं, तुम्हारे जी में जो आए सो करो। तुम सब अच्छे हो बुरी तो सब मैं ही हूँ। इस जीने से तो मरना ही अच्छा है। पर मैं साफ़ साफ़ कहे देती हूं कि मैं किसी से माफी वाफी नहीं मांगूंगी। जो होना था हो गया। अपनी बातें कितनी जल्द भूल गए। सुबह ही तो पंचों से कह रहे थे कि अब मेल नहीं हो सकता। और अब सारा दोष मेरे माथे मढ़ रहे हो ?

लल्लुआ रो रहा है और बार बार कह रहा है, "बली अम्मां के पास जाऊंगा।" 'कल्लो उसे दुलारे से डरा धमका कर चुप कराना चाहती है पर वह चुप नहीं हो रहा है।

दीना—कल्लो, जिद मत करो। लल्लुआ को देख रही हो। तब से बराबर रो रहा है। चलो कल्लो! उठो जल्दी करो।

(लल्लुआ के लगातार रोने से कल्लो घबरा गई है। वह डबडबाई आंखों से लल्लुआ की ओर देखती है। वह ज़मीन पर लोट लोट कर रो रहा है)

कल्लो—बड़ी तारीफ़ कर रहे थे भाभी की। लल्लुआ उन को पुकारता हुआ तब से रो रहा है इतना ही प्यार होता तो अब तक आकर उठा ले जातीं। वे अपना बड़प्पन दिखातीं तो मैं जानती। तो मैं भी उनके सामने छोटी बन जाती। माफ़ी मांग लेती। बच्चे से क्या बैर।

दीना—तुम तो उनकी गोद से भी ललुआ का छीन लो और फिर भी चाहो कि वे बेशर्म बन कर उसे आकर उठा लें वे तुम से बड़ी हैं या तुम उनसे।

(उधर रधिया ने ललुआ का रोना सुना तो झट से उठ खड़ी हुई। किन्तु दरवाज़ा पार करते ही जैसे पैर मन मन भर के हो गए हों। उसे पिछले कल की याद आई। सोचा कि कहीं आज भी ललुआ को गोद से न छीन ले। पर फिर पता नहीं क्या सोच कर झट से गई और ललुआ को उठाकर ले आई। दीना और कल्लो भौचक्के से आँखें फाड़कर देखते रह गए। अब दीना से न रुका गया। वह झट से जाकर बड़े भैया के पैरों पर गिर पड़ा और रोने लगा। इतने में कल्लो भी आकर रधिया के पैरों पर गिर पड़ी।

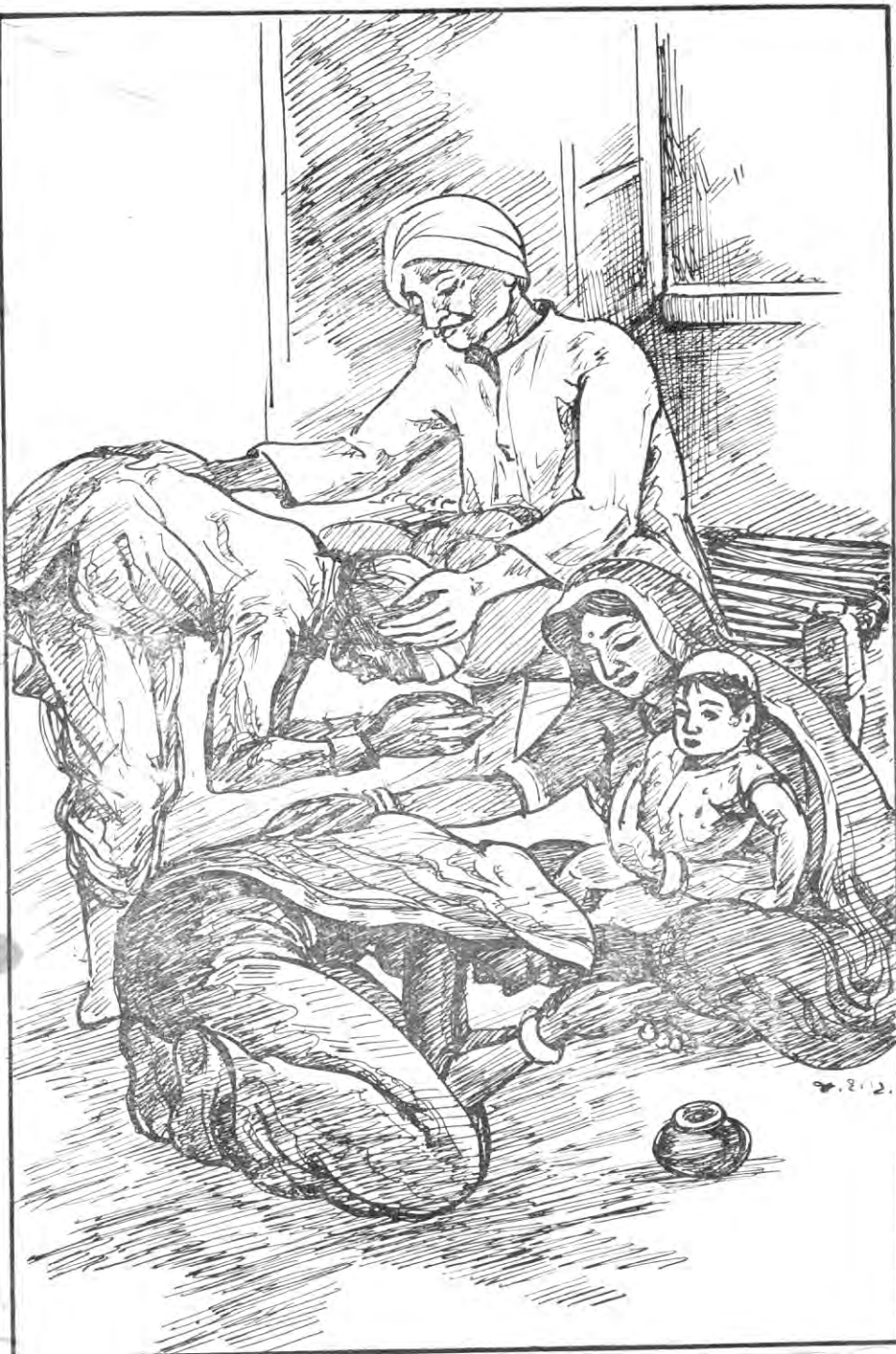

प्रश्न :

नीचे कुछ प्रश्न दिए जाते हैं। इन प्रश्नों को अपने आप से कीजिए और इनके उत्तर दीजिए।ऐसा करने से पता लग जाएगा कि इस पुस्तक को आपने ठीक प्रकार से समझ लिया है या नहीं।

१. जमीन का बंटवारा करने से क्या हानि होती है।

२. दो भाइयों में लड़ाई झगड़ा होने का क्या कारण होता है।

३. हरिया ने रोटी खाने से क्यों इनकार कर दिया था।

४. दीना का सिर शर्म से क्यों झुक गया था।

५. ललुआ क्यों रो रहा था।

नीचे लिखे वाक्यों में खाली स्थानों को ठीक शब्द से भरो।

क. सारा दोष मेरे·····मढ़ रहे हो।

ख. पंच·····होता है।

ग. उसका सिर·····झुक गया था।

घ. ऐसी जली कटी का·····क्या मतलब है।

उत्तर

ऊपर के दिये गये प्रश्नों के उत्तर नीचे दिये जा रहे हैं। अपने उत्तरों को इन से मिलाइए। जिस नम्बर का प्रश्न हो उसी नम्बर का उत्तर देखिए।

१. हल बैल और औज़ारों का खर्च बढ़ जाता है। छोटे छोटे टुकड़े हो जाते, ज़मीन का कुछ भाग मेड़ें बनाने में चला जाता है। इस प्रकार पैदावार कम होती जाती है।

२. स्त्रियों की मनगढ़ंत बातों पर विश्वास करना।

३. उसे भाई के अलग हो जाने का दुःख था।

४. क्यों कि हरिया उसके लिए घरबार जमीन और बैल छोड़ देना चाहता था।

५. वह बड़ी अम्मा के पास जाना चाहता था किन्तु कल्लो जाने नहीं देती थी।

६. क. माथे

ख. परमेश्वर

ग. शरम के मारे

घ. सुनाने का